<u>उत्तराखण्ड राज्य के लिए सोयाबीन की चार रोगरोधी किस्में विकसित</u>

पन्तनगर कृ"ि विश्वविद्यालय द्वारा सोयाबीन की चार नई किस्में **पन्त सोयाबीन 20 (पी0एस0 1475), पन्त सोयाबीन 21 (पी0एस0 1480), पन्त सोयाबीन 22 (पी0एस0 1505), पन्त सोयाबीन 23 (पी0एस0 1521)** को उत्तराखण्ड राज्य किस्म विमोचन समिति द्वारा राज्य के तराई, भावर एवं मैदानी क्षेत्रों के लिए जारी की गयी है। ये किस्में वंशावली विधि द्वारा विकसित की गई हैं। इन प्रजातियों की उत्पादन क्षमता 35-40 कु0/है0 है। इनमें लगभग 40 प्रतिशत प्रोटीन व 20 प्रतिशत तेल पाया जाता है। नई विकसित प्रजातियों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है-

पन्त सोयाबीन 20 (पी0एस0 1475):-यह किस्म 117-124 दिन में पककर तैयार हो जाती है इसके पौधे 60-65 से0मी0 लम्बे फूल सफेदए रोए भूरेए दाना मध्यम गोल एवं पीलाए नाभिका का रंग काला होता है। इस किस्म के पौघो पर फलियां समान रूप से सभी गाँठों पर गुच्छों के रूप में होती है। इसके 100 दानो का भार लगभग 12 ग्राम एंव पैदावार 36 कु0/है0 है। इसमें प्रोटीन 40.5 प्रतिशत एवं तेल की मात्रा 19.32 प्रतिशत उपलब्ध है। यह किस्म पीला वि''ाणु, सोयाबीन मोजैक एवं जीवाणु स्फोट के लिए रोगरोधी एवं वायप अंगमारी (राइजोक्टोनिया) के लिए सहनशील होती है। इस प्रजाति की तीन व''ाेंं के प्रदर्शनो में औसत उपज 19.16 कु0/है0 जो मानक प्रजातियों (पी0 एस0 1347 एवं पी0 एस0 1225) से क्रमशः 12.97 एवं 9.87 प्रतिशत अधिक है एवं किसानो के खेतो में औसत उपज 21.35 कु0/है0 हुई है।

पन्त सोयाबीन 21 (पी0एस0 1480):- इस प्रजाति की तीन व''ाेंं के प्रदर्शनो में औसत उपज 20.57 कु0/है0 है जो मानक प्रजातियों (पी0 एस0 1347 एवं पी0 एस0 1225) से क्रमशः 26.04 एवं 25.35 प्रतिशत अधिक है एवं किसानो के खेतो में औसत उपज 22.27 कु0/है0 हुई है। यह किस्म 123-126 दिन में पककर तैयार हो जाती है इसके पौधे 60-68 से0मी0 लम्बे, फूल सफेदए रोए भूरेए दाना गोल एवं पीलाए नाभिका का रंग काला होता है। इस किस्म के पौघो पर फलियां समान रूप से सभी गाँठों पर गुच्छों के रूप में होती है। इसके 100 दानो का भार लगभग 11.5 ग्राम एंव पैदावार क्षमता 38 कु0/है0 है। इसमें प्रोटीन 40.5 प्रतिशत एवं तेल की मात्रा 19.25 प्रतिशत उपलब्ध है। यह किस्म पीला वि''ाणु, सोयाबीन मोजैक एवं जीवाणु स्फोट के लिए रोगरोधी है एवं वायप अंगमारी (राइजोक्टोनिया) के लिए सहनशील होती है।

पन्त सोयाबीन 22 (पी0एस0 1505):–यह शीघ्र पकने वाली किस्म (112–120 दिन) है इसके पौधे लम्बे, मजबूत एवं सुदृढ 64–89 से0मी0, फूल सफेदए रोए भूरेए दाना गोल एवं पीलाए नाभिका का रंग काला होता है। इस किस्म के पौधें लम्बे होने पर भी गिरते नही है और पककर फलियॉ भी नही चटकती हैं। यह किस्म पीला वि''ाणु, सोयाबीन वि''ाणु एवं जीवाणु स्फोट के लिए रोगरोधी है और वायप अंगमारी (राइजोक्टोनिया) के लिए सहनशील होती है। इसके 100 दानो का भार लगभग 10.85 ग्राम एंव पैदावार क्षमता 35 कु0/है0 है। इस प्रजाति की तीन व''ाों के प्रदर्शनो में औसत उपज 16.87 कु0/है0 है जो मानक प्रजातियों (पी0 एस0 1347 एवं पी0 एस0 1225) से क्रमशः 19.05 एवं 14.61 प्रतिशत अधिक है एवं किसानो के खेतो में औसत उपज 30.15 कु0/है0 पाई गयी है। इसमें प्रोटीन 40.2 प्रतिशत एवं तेल की मात्रा 19.90 प्रतिशत उपलब्ध है।

पन्त सोयाबीन 23 (पी0एस0 1521):–यह किस्म भी वंशावली विधि द्वारा विकसीत की गयी है। इस प्रजाति की तीन व''ाों के प्रदर्शनो में औसत उपज 19.15 कु0/है0 जो मानक प्रजातियों (पी0 एस0 1347 एवं पी0 एस0 1225) से क्रमशः 27.58 एवं 15.77 प्रतिशत अधिक है एवं किसानो के खेतो में औसत उपज 30.00 कु0/है0 हुई है। यह जल्दी पकने वाली किस्म है जो 112–115 दिन में पककर तैयार हो जाती है, इस किस्म में फूल सफेदए रोए भूरेए पीला गोल दानाए नाभिका का रंग काला और इसके पौधे मजबूत एवं सुदृढ 52–72 से0मी0 कृ होते है। इस किस्म मे फलियॉ पककर चटकती भी नहीं है एवं पौधे भी नही गिरते हैं। यह किस्म पीला मोजैक, सोयाबीन मोजैक एवं जीवाणु स्फोट के लिए रोगरोधी है और वायप अंगमारी (राइजोक्टोनिया) के लिए सहनशील होती है। इसके 100 दानो का भार लगभग 11.10 ग्राम एंव पैदावार क्षमता 40 कु0/है0 है। इसमें प्रोटीन 40 प्रतिशत एवं तेल की मात्रा 19.81 प्रतिशत उपलब्ध है। इसकी उत्पादन क्षमता 40 कु0/है0 है।

इन किस्मो को विकसित करने में डा0 पु''पेन्द्रए डा0 कामेन्द्र सिंह, डा0 पी. एस. 'ाुक्ल एवं डा0 मनोज गुप्ता का विशे''ा योगदान रहा है। सोयाबीन की किस्म विकसित करने वाले इन वैज्ञानिकों को कुलपति डा0 मंगला राय, निदेशक शोध डा0 जे0 पी0 सिंहए ने बधाई देते हुए कहा कि ये किस्में इस क्षेत्र की प्रमुख समस्याओ जैसे पीला वि''ाणु, सोयाबीन मोजैक एवं जीवाणु स्फोट इत्यादि के लिए रोगरोधिता के साथ साथ इनमे अधिक उत्पादन क्षमता भी है। इससे प्रदेश में सोयाबीन की उत्पादकता मे वृद्धि होगी व किसानो की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा इन किस्मों

का किसानो के खेतो पर भी उत्पादकता, परिपक्वता, रोगरोधिता आदि के लिए परीक्षण किया गया है।